Inspira-Journal of Commerce, Economics & Computer Science (JCECS)
ISSN : 2395-7069 General Impact Factor : 2.4668, Volume 04, No. 01, January-March., 2018, pp. 317-324

अजमेर नगर निगम की नगरीय सेवाओं की लागतः एक अध्ययन

जितेन्द्र प्रकाश बोहरा*
प्रो. (डॉ.) एम. एल. वडेरा**

lkj

भारत में लोकतन्त्र प्रणाली है और शासन व्यवस्था त्रिस्तरीय है। केन्द्र में केन्द्रीय सरकार, प्रान्तों में प्रान्तीय सरकार एवं स्थानीय स्तर पर स्थानीय सरकार द्वारा नागरिकों की आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा करने का दायित्व हैं। नगर निगम स्थानीय संस्थाओं में शीर्ष संस्था (ईकाई) है। अतः नगरीय सेवाओं का सृजन एवं वितरण करना इसका प्राथमिक कार्य हैं। नगर निगम द्वारा नगर में निवास करने वाले नागरिकों की न्यूनतम आवश्यकताओं को पहचानना एवं उन आवश्यकताओं की पूर्ति करने पर क्या लागत आएगी, इस ओर ध्यान केन्द्रीत करना भी जरूरी है। नगर निगम, स्थानीय निकाय की मुख्य संस्था होने के कारण इसके क्रियाकलाप देश के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। नगर निगम द्वारा स्थानीय नागरिकों के लिए जिन सेवाओं का सृजन एवं वितरण किया जाता है। उन्हें व्यय की विभिन्न मदों में वर्गीकृत किया जाता हैं। यह व्यय वास्तव में लोक कल्याण संबंधी व्यय की श्रेणी में आते हैं। एक वित्तीय वर्ष की समाप्ती पर एक नगर निगम द्वारा किए गए कुल व्यय कितने हैं एवं उस नगर में निवास करने वाली जनता को उन सेवाओं का लाभ कितना मिलता हैं अर्थात् प्रति व्यक्ति लागत क्या आती हैं, इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस शोध पत्र में राजस्थान के एक नगर निगम, अजमेर नगर निगम के पिछले दस वर्षों के कुल व्ययों को आधार मानकर, वहाँ रहने वाले नागरिकों की प्रति व्यक्ति लागत के संबंध में एक अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा हैं।

शब्द कुंजी (Key Words) :– नगर निगम, व्यय, प्रति व्यक्ति लागत, औसत व्यय।

1- ifjp; ¼**Introduction**½

भारत एक लोकतांत्रिक देश हैं। लोकतन्त्र का मूल आधार जनता की शासन में भागीदारी से हैं। प्रत्येक देश के नागरिकों को जीवन निर्वाह हेतु आधारभूत आवश्यक्ताओं को उपलब्ध कराने का दायित्व उस देश की शासन व्यवस्था का होता हैं। हमारे देश में शासन केन्द्रीय राज्यीय एवं स्थानीय स्तरों में विभक्त हैं। नागरिक सेवाओं का सृजन करना एवं उनका उचित रूप से वितरण करना स्थानीय निकायों का प्रमुख कार्य होता है। बी. वेंकटराव के अनुसार, ''स्थानीय सरकार, राज्य सरकार का वह भाग है जो मुख्यतः स्थानीय विषयों से संबंध रखती हैं तथा उसकी शासन करने वाली सत्ता के अधीन रहती हैं लेकिन उसके चुनाव, राज्य की सत्ता के नियंत्रण की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से योग्य निवासियों द्वारा किये जाते है।'' अतः इन स्थानीय संस्थाओं का मुख्य ध्येय यह होना चाहिए कि सृजित की गई सेवाओं का वितरण नगरवासियों को इस प्रकार किया जाए कि वह अधिकतम सामाजिक सन्तुष्टी के उद्देश्य को पूर्ण कर सकें। इस संबंध में नगर निगमों को निम्न बिन्दुओं पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रीत करना चाहिए :–

- नागरिकों की मूलभूत एवं न्यूनतम आवयश्कताएँ क्या हैं तथा
- नागरिकों की आवश्यकताओं की पूर्ति की लागत क्या होगी।

---

* शोधार्थी, लेखांकन विभाग, वाणिज्य एवं प्रबंध अध्ययन संकाय, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

** निदेशक, स्कूल ऑफ बिजनेस एण्ड कॉमर्स, मनीपाल विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

उक्त मानक ही स्थानीय निकाय को नगरीय सेवाओं की लागत तथा उनसे जनता को प्राप्त होने वाली संतुष्टी के मध्य उद्देश्यपूर्ण संबंध स्थापित करने के आधार हैं। एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका के अनुसार स्थानीय शासन से आशय, '' पूर्ण राज्य की अपेक्षा एक अंदरूनी प्रतिबंधित एवं छोटे क्षेत्र में निर्णय लेने तथा उनको क्रियान्वित करने वाली सत्ता से है।''

नगर निगम स्थानीय शासन की शीर्षस्थ संस्था हैं। नगर निगम द्वारा अपने क्षेत्र में रहने वाले नागरिकों को प्रदान की जाने वाली सेंवाओं पर जो व्यय किये जाते हैं वह सार्वजनिक व्ययों की श्रेणी में आते हैं। यह व्यय नगर निगम द्वारा नागरिकों के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक कल्याण हेतु आवश्यक होते हैं। नगर निगम द्वारा किये जाने वाले कार्यो को मुख्य रूप से अनिवार्य एवं ऐच्छिक दो भागों में बाँटा जाता हैं। सामान्य रूप से नगर निगम द्वारा नागरिकों को आधार भूत सेवाओं जैसे– जल व्यवस्था, बिजली व्यवस्था, जन स्वास्थ्य, रक्षा, स्वच्छता, सार्वजनिक निर्माण एवं मरम्मत, पशुग्रह संचालन, रोशनी, मनोरंजन आदि उपलब्ध कराई जाती हैं। नगर निगम अर्थात स्थानीय शासन की आवश्यकता के संबंध में मुताबिल एवं खान ने अपना दृष्टिकोण इन शब्दों में व्यक्त किया हैं, ''लोगों का संगठित समूह जब एक स्थान पर, एक निश्चित भौगोलिक सीमा में रहने लगता हैं तो उनमें एक सामुदायिकता और एकता की भावना उत्पन्न हो जाती हैं। इन लोगों के इस सामूहिक आवास के फलस्वरूप कुछ समस्याएं भी उत्पन्न हो जाती है। इन समस्याओं का संबंध नागरिक जीवन की सुविधाओं से होता हैं, जैसे पानी की व्यवस्था, गन्दे पानी के निष्कासन के लिए नालियों का प्रबन्ध, सड़कों की सफाई, कूड़े करकट का हटाया जाना, सार्वजनिक मार्गों पर प्रकाश की व्यवस्था, महामारियों की रोकथाम, प्राथमिक स्वास्थ्य और चिकित्सा व्यवस्था तथा नागरिकों को स्वस्थ पर्यावरण उपलब्ध करवाना इत्यदि। जैसे–जैसे नगर की जनसंख्या बढ़ती हैं उस शहर का आकार–प्रकार भी बढ़ता चला जाता है और समस्याएं भी उसी अनुपात में विकराल रूप धारण करने लगती हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ नागरिकों के जीवनयापन की दैनिक आवश्यकताओं में पर्याप्त परिवर्तन आ गया है। इस कारण स्थानीय स्वशासन से उनकी अपेक्षाएं निरन्तर बढ़ रही हैं। स्थानीय लोगों की बढ़ती हुई स्थानीय आर्थिक, सामाजिक आवश्यकताओं और उनसे उत्पन्न समस्याओं के समाधान के लिए एक सशक्त स्थानीय शासन या स्वशासन की आवश्यकता निरन्तर बढ़ती जा रही है।

2- 'kk/k leL;k ½**Research Problem**½

प्रस्तुत शोध पत्र के विषय का चयन नगर निगमों द्वारा अपने क्षेत्र वासियों को दी जाने वाली सेवाओं के विशेष महत्व को ध्यान में रखते हुए किया गया है। इस शोध पत्र में राजस्थान के अजमेर नगर निगम द्वारा नागरिक सेवाओं पर कितना व्यय किया जाता हैं तथा उसकी प्रतिव्यक्ति लागत निगम को क्या आती हैं, इसका अध्ययन किया गया है।

3- 'kk/k i;kstu ½**Objectives of Research**½

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

- अजमेर नगर निगम द्वारा नागरिक सेवाओं पर किये जाने वाले व्ययों की विभिन्न मदों का अध्ययन करना।
- अजमेर नगर निगम द्वारा विभिन्न मदों पर किये गये व्ययों की प्रति व्यक्ति लागत ज्ञात करना।
- विभिन्न वर्षों से प्राप्त हुई प्रति व्यक्ति लागत का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- विभिन्न व्ययं शीर्षकों के औसत व्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

4- lkfgR; dh leh{kk ½**Review of Literature**½

नगर निगम स्थानीय निकाय होते हैं । स्थानीय निकायों का देश के सामाजिक आर्थिक जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह सम्पूर्ण राष्ट्र में अर्थशास्त्र, वाणिज्य, सार्वजनिक प्रशासन, समाजशास्त्र के साथ–साथ संस्थागत एवं व्यक्तिगत शोधकर्ताओं को आकर्षित करता है। अतः यह हमेशा शोध का विषय रहा है।

सामान्यतः लोक प्रशासन और चुनाव सुधारों की समस्या जैसे– सामान्य पहलुओं को शोध कार्य में शामिल किया जाता हैं। शोध का एक अन्य प्रमुख क्षेत्र नगर निगम के व्यय एवं लागतें तथा उनका प्रभाव भी है।

निम्नलिखित साहित्य राजस्थान में नगर निगमों/स्थानीय निकायों के कार्यों एवं समस्याओं से संबंधित होने के कारण अध्ययन हेतु उपयोगी आधार प्रदान करते है–

डॉ. ए.आर. जावाक, राजस्थान में नगर पालिका राजस्व का एक तुलनात्मक अध्ययन (1965–75), (अप्रकाशित शोध ग्रंथ, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर) इन्होंने स्थानीय और राज्य सरकार के मध्य वित्त के सीमांकन के लिए वकालात की तथा नगर पालिकाओं को उनके गैर कर राजस्व के वृद्धि करने का सुझाव दिया।

डॉ. सी.पी. भाम्भरी, नगर पालिकाएँ और उनके वित्त (पदम बुक कम्पनी, जयपुर, 1969)। यह राजस्थान की नगर पालिकाओं में अपर्याप्त संसाधनों की समस्या पर प्रकाश डालती है।

डॉ. पी.एल. भार्गव, राजस्थान में नगरीय वित्त, (अप्रकाशित शोध ग्रंथ, राजस्थान विश्वविद्यालय 1973), नगर पालिका वित्त के सभी पहलुओं को शामिल करते हुए व्यापक अनुसंधान करने वाले डॉ. भागर्व राजस्थान के प्रथम शोधकर्ता थे।

डॉ. एम.एल. सिंहल, राजस्थान में नगरीय वित्त (अप्रकाशित शोध ग्रंथ, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर, 1978) नगर निगमों के वित्त के स्रोतो और उनके उपयोग से संबंधित 10 वर्षों की अवधि के लिए आर्थिक विश्लेषण किया गया है।

डॉ. एस रामा राव और एम. नागेश्वर राव, शहरी स्थानीय सार्वजनिक क्षेत्रों की आर्थिक स्थिति (1983), दोनों ने संयुक्त कार्य करते हुए यह माना कि जनसंख्या वृद्धि के दबाव के फलस्वरूप शहरी जीवन को बेहतर बनाने के लिए सरकार का विभिन्न स्तरों पर समाधान केन्द्र स्थापित किया जाना चाहिये। शहरी स्थानीय निकाय लोक सेवाओं की मांग पूर्ण करने में समर्थ नहीं है, इन निकायों एवं जनता के मध्य संघर्ष हैं।

डॉ. एन.के. पड्या, राजस्थान में नगरीय के वित्त (हिमांशु प्रकाशन, उदयपुर 1993) इसमें वर्ष 1975–76 से 1984–85 की अवधि के लिए राजस्थान की बीस नगर पालिकाओं के व्ययों के विभिन्न पहलुओं को परखा गया है।

डॉ. एम.एल. वडेरा, स्थानीय स्वायत सरकार, लेखांकन प्रणालियाँ (राजस्थान नगरीय लेखों का आलोचनात्मक अध्ययन) (प्रकाशित शोध ग्रंथ जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर मई 1999) में राजस्थान की सभी 182 नगर पालिकाओं के लिए वर्ष 1985–86 से 1994–95 की 10 वर्षों की अवधि के आय व व्ययों के खातों के विश्लेषण से संबंधित कार्य किया है। इसमें नगर निगम के प्रस्तुत लेखों का महत्वपूर्ण मूल्यांकन कर राजस्थान की नगर पालिकाओं के लिए मॉडल लेखा प्रणाली का सुझाव दिया गया है।

नन्दकिशोर प्रजापत, जोधपुर नगर निगम के आय के स्रोत एक अध्ययन, (अप्रकाशित, एम.कॉम. (उत्तरार्द्ध) लेखांकन विभाग, जे.एन.वी. विश्वविद्यालय, जोधपुर 2000–01) में नगर निगम की विभिन्न स्त्रोतों से होने वाली आय का अध्ययन कर उसका प्रतिव्यक्ति आय के दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है इस हेतु वर्ष 1993–94 से 1999–2000 तक के समंको का प्रयोग किया गया हैं।

धनसिंह राजपुरोहित, नगरिय सेवाओं पर व्यय एवं उनकी लागते एक तुलनात्मक अध्ययन (अध्ययन इकाईयाँः जोधपुर नगर निगम एवं बिलाड़ा, नगर पालिका) (अप्रकाशित एम.फिल शोध ग्रंथ, जे.एन.वी. विश्वविद्यालय, जोधपुर 2002) इस शोध कार्य में जोधपुर नगर निगम व बिलाड़ा नगर पालिका द्वारा दी जाने वाली सेवाओं पर किये जाने वाले व्ययों का विश्लेषण तथा इनकी लागत का निर्धारण किया गया है इस हेतु वर्ष 1993 से 2000 तक के समंको का प्रयोग किया गया हैं।

5- ’kks/k i)fof/k ¼Research Methodology½

5-1 ’kks/k dk {ks= ¼Scope of Research½

शोध कार्य हेतु राजस्थान के अजमेर नगर निगम के 2006–07 से 2015–16 तक के 10 वर्षों के व्यय समंको का अध्ययन किया गया है।

5-2 lead ladyu ¼Sources of Information½

उपर्युक्त उद्देश्यों पर आधारित सम्पूर्ण शोध में द्वितीयक समकों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में प्रयुक्त समंक के स्रोत स्थानीय स्वायत शासन विभाग जयपुर के द्वारा नगर निगमों से संकलित समंक तथा नगर निगम के वार्षिक आय–व्यय प्रतिवेदनों एवं उनके लेखांकन विभाग से संकलित किये गये हैं।

5-3 ekey: dk v/;;u ¼Case Study½

अध्ययन विषय को अधिक स्पष्ट एवं व्यवहारिक रूप में प्रस्तुत करने के लिए राजस्थान के अजमेर नगर निगम का इस शोधपत्र में व्यक्तिक इकाई के रूप में चयन किया गया हैं।

5-4 ’kks/k i)fØ;k ¼Research Process½

व्ययों के विश्लेषण हेतु गत 10 वर्षों 2006–07 से 2015–16 तक के व्ययों को शामिल किया गया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से निगम के कुल व्ययों एवं उसकी विभिन्न मदों को प्रस्तुत किया गया है। प्रति व्यक्ति लागत की गणना उपर्युक्त स्रोत से प्राप्त व्यय समकों में सम्बन्धित वर्ष की जनसंख्या का भाग देकर की गई हैं। प्रत्येक वर्ष की जनसंख्या की गणना पिछले दों दशकों (2001, 2011) को आधार मानकर सांख्यिकी विश्लेषण की प्रमुख विधि 'आन्तरगणन' व 'बाह्यगणन' से की गई हैं।

dqy 0;; ,oa 0;;ksa dh izfr 0;fDRk ykxr ¼&

अजमेर नगर निगम द्वारा पिछले दस वर्षो किये गये व्यय एवं प्रतिव्यक्ति लागत जो कि कुल व्ययों में जनसंख्या का भाग देकर प्राप्त की गई है, को निम्न तालिका में दर्शाया गया हैं :

rkfydk 1¼ vtesj uxj fuxe }kjk fd;s x;s uxjh; lsokvksa ij dqy 0;; ,oa dqy 0;;ksa dh izfr 0;fDRk ykxr

वर्ष	कुल व्यय (लाखों में)	निर्देशांक आधार वर्ष 2006–07	वृद्वि दर पूर्व वर्ष की तुलना में	जनसंख्या (लाखों में)	प्रति व्यक्ति लागत	निर्देशांक आधार वर्ष 2006–07	वृद्धिदर पूर्व वर्ष की तुलना में
2006–07	2660.19	100.00	-	5.19	512.56	100.00	-
2007–08	4509.85	169.53	69.53	5.25	859.02	167.59	67.59
2008–09	4707.53	176.96	4.38	5.3	888.21	173.29	3.40
2009–10	4150.53	156.02	-11.83	5.36	774.35	151.07	-94.00
2010–11	4288.34	161.20	3.32	5.42	791.21	152.08	2.18
2011–12	4531.41	170.34	5.67	5.48	826.90	161.33	4.52
2012–13	8427.85	316.81	85.99	5.53	1524.02	297.33	84.31
2013–14	5876.01	220.89	-30.28	5.59	1051.16	205.08	-31.03
2014–15	6287.82	236.37	7.01	5.65	1112.89	217.05	5.87
2015–16	11859.00	445.80	88.60	5.7	2080.53	405.91	86.95
औसत	5729.85		22.239		1042.09		14.42

उपर्युक्त तालिका 1 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अजमेर नगर निगम के वर्ष 2006–07 में कुल व्यय 2660.19 लाख रूपये थे जो कि वर्ष 2015–16 में बढ़कर 11859 लाख रूपये हो गए। निर्देशांक आधार वर्ष 2006–07 की तुलना में वर्ष 2015–16 में तक 445.80 तक पहुँच गया। वर्ष 2009–10 एवं वर्ष 2014–15 में क्रमशः 11.83 एवं 30.28 प्रतिशत की कमी देखने को मिलती हैं। सर्वाधिक वृद्धिदर पूर्व वर्ष की तुलना में 88.60

प्रतिशत वर्ष 2015–16 में दृष्टिगत होती है। नगर निगम के दस वर्षो के कुल व्ययों का औसत 5729.85 हैं। प्रांरभिक 6 वर्षों में औसत कुल व्ययों से कुल व्यय कम किये गये थे शेष वर्षो में इनमें वृद्धि हुई। कुल व्ययों की पूर्व वर्ष की तुलना में औसत वृद्धि दर 22.24 प्रतिशत रही।

नगर निगम की जनसंख्या के आधार पर प्रति व्यक्ति लागत ज्ञात की गई है। जो कि वर्ष 2006–07 में 512.56 थी और वर्ष 2015–16 में 2080.53 हो गई। कुल प्रति व्यक्ति लागत में प्रति वर्ष वृद्धि देखने को मिल रही हैं अर्थात अजमेर नगर निगम द्वारा अपने नागरिकों के लिए सेवाओं का सृजन एवं वितरण में निरन्तर वृद्धि की जा रही हैं। निर्देशांक आधार वर्ष 2006–07 की तुलना में अगले दो वर्षो में तो निरन्तर वृद्धि हुई परन्तु वर्ष 2009–10 व 2010–11 में निर्देशांक में कमी आई थी। वर्ष 2011–12 से निर्देशांक प्रतिशत लगातार बढ़ता ही गया। प्रति व्यक्ति औसत लागत 1042.09 आई। इससे यह स्पष्ट होता हैं कि प्रथम 6 वर्षो में प्रति व्यक्ति लागत औसत से कम रही और शेष वर्षो में इसमें उत्तरोतर वृद्धि हुई। प्रति व्यक्ति लागत की वृद्धि दर पूर्व वर्ष की तुलना में न्यूनतम (–94) वर्ष 2009–10 में तथा सर्वाधिक 86.95 वर्ष 2015–16 में दर्ज हुई और औसत वृद्धि दर 14.42 आई अर्थात पिछले दस वर्षों में मात्र तीन वर्षो में औसत वृद्धि दर से पूर्व वर्ष की तुलना में वृद्धि दर अधिक रही और शेष वर्षों में इसमें कमी दर्ज हुई। उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि अजमेर नगर निगम के व्ययों में प्रति व्यक्ति लागत में निरन्तर वृद्धि हुई है अर्थात निगम द्वारा नागरिकों के लिए सेवाओं का सृजन एवं वितरण में लगातार वृद्धि की गई है।

fofHkUUk enk ij 0;;

अजमेर नगर निगम द्वारा नगरिकों को सेवाऐं प्रदान करने के लिये जो व्यय किये जाते हैं उनके मुख्य रूप से निम्न शीर्षक है :–

1. स्थापना व्यय, 2. प्रशासकीय व्यय 3. परिचालन एवं संधारण व्यय

4. ब्याज एवं वित्तीय व्यय 5. कार्यक्रम व्यय 6. राजस्व, अनुदान, अंशदान एवं सहायता व्यय

7. विविध व्यय

व्यय की इन विभिन्न मदों पर पिछले दस वर्षों में अजमेर नगर निगम द्वारा किये गये व्ययों का विवरण अग्र तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका 2 के आकड़ें यह स्पष्ट करते है कि अजमेर नगर निगम द्वारा अपने कुल व्ययों का सबसे अधिक भाग स्थापना व्ययों पर, लगभग 70 प्रतिशत (औसतन 69.52 प्रतिशत) किया गया। इस मद पर न्यूनतम एवं अधिकतम व्यय प्रतिशत क्रमशः वर्ष 2007–08 में 58.11 प्रतिशत एवं 2011–12 में 79.05 प्रतिशत किया गया। प्रशासकीय व्यय औसत रूप से 5.13 प्रतिशत किये गये जो कि सर्वाधिक वर्ष 2006–07 में 9.5 प्रतिशत एवं न्यूनतम वर्ष 2009–10 में 0.64 प्रतिशत किये गये। कुल व्ययों का दूसरा बड़ा भाग औसत रूप से 19.61 प्रतिशत परिचालन एवं संधारण व्यय पर किये गये जो कि न्यूनतम एवं अधिकतम क्रमशः वर्ष 2012–13 में 12.75 प्रतिशत एवं 2015–16 में 23.67 प्रतिशत किये गये। ब्याज एवं वित्तीय व्यय पिछले दस वर्षों में मात्र दो बार ही किये गये जिसका औसत 10.01 प्रतिशत था। कार्यक्रम व्ययों का कुल व्यय में औसत प्रतिशत 1.55 प्रतिशत ही था, जो कि अधिकतम वर्ष 2015–16 में 2.54 और न्यूनतम 2012–13 में 0.77 प्रतिशत या राजस्व अनुदान, अंशदान एवं सहायता पर अन्य व्ययों की तुलना में सबसे कम व्यय किये गये हैं जिसका औसत मात्र 0.07 प्रतिशत हैं। विविध व्ययों का औसत 4.71 प्रतिशत था, जो कि अधिकतम एवं न्यूनतम क्रमशः वर्ष 2012–13 में 13.24 प्रतिशत एवं 2010–11 में 2 प्रतिशत किया गया।

इस विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि अजमेर नगर निगम द्वारा किये गये कुल व्ययों का सर्वाधिक भाग औसत रूप से स्थापना व्यय के रूप में खर्च किया गया है और सबसे कम राजस्व, अनुदान, अंशदान एवं सहायता व्ययों की मद में किया गया है तथा ब्याज एवं वित्तीय व्यय भी नाम मात्र के ही किये गये है।

तालिका 2: अजमेर नगर निगर द्वारा किये गये विभिन्न व्यय

वर्ष	स्थापना व्यय		प्रशासकीय व्यय		परिचालन एवं संधारण व्यय		ब्याज एवं वित्तीय व्यय		कार्यक्रम व्यय		राजस्व, अनुदान, अंशदान एवं सहायता		विविध व्यय	
	व्यय लाखों में	कुल व्यय पर प्रतिशत	व्यय लाखों में	कुल व्यय पर प्रतिशत	व्यय लाखों में	कुल व्यय पर प्रतिशत	व्यय लाखों में	कुल व्यय पर प्रतिशत	व्यय लाखों में	कुल व्यय पर प्रतिशत	व्यय लाखों में	कुल व्यय पर प्रतिशत	व्यय लाखों में	कुल व्यय पर प्रतिशत
2006–07	1861.41	69.97	252.59	9.5	427.9	16.09	0	0	47.46	1.78	2.54	0.09	68.29	2.57
2007–08	2620.56	58.11	361.99	8.03	1291.3	28.63	0	0	61	1.35	15	0.33	160	3.55
2008–09	3164.04	67.22	288.99	6.14	1035.3	21.99	0	0	71	1.51	15	0.32	133.2	2.83
2009–10	3064.65	73.84	26.4	0.64	793.51	19.12	100	2.41	48.58	1.17	0	0	117.49	2.83
2010–11	3295.66	76.85	21.89	0.51	835.19	19.48	0	0	50	1.17	0	0	85.6	2
2011–12	3581.98	79.05	35.09	7.74	724.04	15.98	0.14	0.003	66.64	1.47	0	0	123.92	2.73
2012–13	5953.85	67.08	518	6.15	1075	12.75	0	0	65	0.77	0	0	1116	13.24
2013–14	4244.93	72.24	318.77	5.42	1057.53	18	0	0	98.36	1.67	0	0	156.42	2.66
2014–15	4457.78	70.9	169.8	2.7	1281.21	20.38	0	0	119.15	2.03	0	0	259.88	4.13
2015–16	7108	59.94	529	4.46	2807	23.67	0	0	160	2.54	0	0	1255	10.58
औसत	3935.29	69.52	252.25	5.13	1132.8	19.61	10.01	0.24	78.72	1.55	3.25	0.07	347.58	4.71

fu"d"k

- अजमेर नगर निगम के कुल व्ययों में वर्ष 2009–10 व 2013–14 में क्रमशः 11.83 व 30.28 प्रतिशत की कमी हुई जबकि अन्य वर्षो में कुल व्ययों में वृद्धि दृष्टिगत होती हैं।

- निगम द्वारा पिछले 10 वर्षों में कुल व्ययों के रूप में औसतन 5729.83 लाख रूपये व्यय किये गये।
- पूर्व वर्ष की तुलना औसत वृद्धि दर 22.24 प्रतिशत रही। आकड़ों के अनुसार मात्र तीन वर्षो में ही औसत वृद्धिदर से अधिक वृद्धि देखने को मिलती हैं।
- प्रतिव्यक्ति लागत औसत रूप से 1042.09 रूपये आई।
- प्रति व्यक्ति लागत की औसत वृद्धिदर 14.42 प्रतिशत रही। वर्ष 2009–10 में 94 प्रतिशत एवं 2013–14 में 31.03 प्रतिशत की कमी आई और सर्वाधिक वृद्धिदर 84.31 प्रतिशत वर्ष 2012–13 में दर्ज की गई।
- अजमेर नगर निगम द्वारा अपने कुल व्ययों का औसत रूप से सर्वाधिक भाग, लगभग 70 प्रतिशत स्थापना व्यय पर किया जाता हैं।
- द्वितीय व्यय शीर्षक प्रशासकीय व्यय पर कुल व्यय का औसत रूप से 5.13 प्रतिशत खर्च किया गया।
- राजस्व, अनुदान, अंशदान एवं सहायता व्यय शीर्षक में निगम द्वारा केवल प्रारंभिक तीन वर्षों मे ही व्यय किया गया, जिसका कुल व्यय पर औसत मात्र 0.07 प्रतिशत है।
- व्यय के अन्य शीर्षक ब्याज एवं वित्तीय व्यय में भी निगम द्वारा पिछले दस वर्षों में मात्र दो वर्षो में ही व्यय किया गया है, जो कि कुल व्यय का औसत रूप से 0.24 प्रतिशत आँका गया।
- ऑकड़ों से यह स्पष्ट दृष्टिगत होता हैं कि वर्तमान में राजस्व, अंशदान, अनुदान एवं सहायता तथा ब्याज एवं वित्तीय व्यय की मद पर कोई खर्च नहीं किया जा रहा है।
- व्यय की मद कार्यक्रम व्यय पर निगम द्वारा प्रतिवर्ष व्यय किया जाता है। जिसका औसत 78.72 लाख रूपये है और कुल व्यय में औसत प्रतिशत 1.55 हैं।
- व्यय की अन्तिम मद विविध व्यय पर कुल व्यय का औसतन 4.71 प्रतिशत खर्च किया जाता हैं।
- अजमेर नगर निगम द्वारा आवश्यक व्ययों में निरन्तर वृद्धि की जा रही हैं अर्थात नागरिकों के कल्याण हेतु सुविधाओं एवं सवोओं में भी प्रत्याशित वृद्धि कर उनकी संतुष्टी के स्तर को बढ़ाने के प्रयास किये जा रहे हैं।

lnHk xUFk lph

~ एन्साइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका

~ बी. वेंकटराव, ए हन्ड्रेड ईयर्स ऑफ लोकल गवर्नमेन्ट इन आसाम, बनि प्रकाश मण्डल, गौहाटी, 1965, पृष्ठ संख्या 1

~ मुतालिब एम. ए. एवं खान, थ्योरी ऑफ लोकल गवर्नमेन्ट, नई दिल्ली, स्टर्लिंग, 1983, पृष्ठ –3

~ जावाक ए.आर., राजस्थान में नगर पालिका राजस्व का एक तुलनात्मक अध्ययन (1965–75),

~ भाम्भरी सी.पी., नगर पालिकाएँ और उनके वित्त (पदम बुक कम्पनी, जयपुर, 1969)

~ भार्गव पी.एल., राजस्थान में नगरीय वित्त, (अप्रकाशित शोध ग्रंथ, राजस्थान विश्वविद्यालय 1973),

~ सिंहल एम.एल., राजस्थान में नगरीय वित्त (अप्रकाशित शोध ग्रंथ, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर, 1978

~ राव एस रामा और राव एम. नागेश्वर, शहरी स्थानीय सार्वजनिक क्षेत्रों की आर्थिक स्थिति (1983)

~ पड्या एन.के., राजस्थान में नगरीय के वित्त (हिमांशु प्रकाशन, उदयपुर 1993)

~ वडेरा एम.एल., स्थानीय स्वायत सरकार, लेखांकन प्रणालियाँ (राजस्थान नगरीय लेखों का आलोचनात्मक अध्ययन) (प्रकाशित शोध ग्रंथ जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर मई 1999)

~ प्रजापत नन्दकिशोर, जोधपुर नगर निगम के आय के स्रोत एक अध्ययन, अप्रकाशित, एम.कॉम. (उत्तरार्द्ध) लेखांकन विभाग, जे.एन.वी. विश्वविद्यालय, जोधपुर 2000–01

~ राजपुरोहित धनसिंह, नगरिय सेवाओं पर व्यय एवं उनकी लागते एक तुलनात्मक अध्ययन (अध्ययन इकाईयाँः जोधपुर नगर निगम एवं बिलाड़ा, नगर पालिका) (अप्रकाशित एम.फिल शोध ग्रंथ, जे.एन. वी. विश्वविद्यालय, जोधपुर 2002

~ रिपोर्ट ऑफ द कमेटी ऑफ मिनिस्टर्स ऑन आगमन्टेशन ऑफ फाइनेसियल रिसोर्सेज ऑफ अरबन कमेटी, लॉकल बॉडीज 1963

~ अजमेर नगर निगम वार्षिक आय व्यय का प्रतिवेदन वर्ष 2006—07 से वर्ष 2015—16

~ वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन 2016—17 स्वायत शासन विभाग राजस्थान, जयपुर

~ राजस्थान नगर पालिका अधिनियम 1959 यूनिक ट्रेडर्स जयपुर।

~ बाफना राजेन्द्र राजस्थान नगर पालिका अधिनियम 2009 बाफना पब्लिशिंग हाउस, चौड़ा रास्ता जयपुर।

~ माहेश्वरी एस. एन. मित्तल ए. एन. लागत लेखांकन माहेश्वरी बुक डिपो, नई दिल्ली।

~ नागर के. एन. सांख्यिकी के मूल तत्व, मीनाक्षी प्रशासक मेरठ।

~ Web Site : www.ajmermc.org

❑❑❑